विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:- १५/०७/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी. पर आधारित)

*श्लोक:८.

अमन्त्रमक्षरं नास्ति नास्ति मूलमनौषधम् ।

अयोग्य: पुरुष: नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभ:।।

*अन्वय:

अमन्त्रम् अक्षरम् नास्ति , अनौषधम् मूलम् नास्ति अयोग्य: पुरुष: नास्ति , तत्र योजक: दुर्लभ: ।

*शब्दार्था:

अमत्रम् -मन्त्र (विचार) से रहित , अनौषधम् -औषधि से रहित

तत्र - वहां (उस स्थान पर) , अक्षरम् -अक्षर (ज्ञान) ,

अयोग्य: - योग्यता से हीन , दुर्लभ: -कठिनाई से मिलने वाला ,

मूलम् - जड , योजक: - जोडने वाला

*अर्थ- मन्त्र रहित (हीन) अक्षर नहीं होता है , जड जडी बुटियों (औषधियों)से रहित नहीं होती है। योग्यता से रहित व्यक्ति वास्तविक पुरूष (इंसान) नहीं होता है। वहां गुणों को वस्तुओं-व्यक्तियों से जोडने वाला दुर्लभ होता है।